अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मण्डल

समय : 3 घंटा | तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2015) | दिनांक 21.12.2015

तृतीय वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र | पूर्णांक – 100

नव पदार्थ – पुण्य, पाप – 50

प्र.1 किन्हीं दस प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें – 20

(पुण्य – किन्हीं छः प्रश्नों का उत्तर दें)

(क) द्रव्य पुण्य व भाव पुण्य किसे कहते हैं?

(ख) आनुपूर्वी नाम–कर्म किसे कहते हैं?

(ग) अस्थियों की कौन सी रचना 'वज्रऋषभनाराच' कहलाती है?

(घ) किस नाम कर्म के उदय से शरीर के नाभि से मस्तक का भाग सुंदर व शुभ होता है?

(ङ) तीर्थंकर नाम कर्म बंध के बीस हेतु में से 'अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग' का क्या तात्पर्य है?

(च) ''वैयावच्चेणं तित्थयरनामगोत्तं कम्मं निबंधइ'' इस पंक्ति का अर्थ लिखें।

(छ) समचतुरस्त्र संस्थान किसे कहते हैं?

(ज) आचार्य भिक्षु ने पुण्य जनित काम भोगों को विष–तुल्य क्यों कहा है?

(पाप – किन्हीं चार प्रश्नों का उत्तर दें)

(झ) संघात नाम कर्म किसे कहते हैं?

(ञ) ठाणं सूत्र के दूसरे स्थान में जो अन्तराय कर्म के दो भेद बताएँ हैं, उन्हें अर्थ सहित लिखें।

(ट) वे कौन से तीन प्रकार के प्रयोग हैं, जिनके द्वारा जीवों के कर्मोपचय होता है?

(ठ) ठाणं सूत्र में वेदना दो प्रकार की बताई गई है, व्याख्या सहित नाम लिखें।

(ड) सम्यक्त्व मिथ्यात्व व सम्यक्त्व मोहनीय को पाप प्रकृतियों में क्यों नहीं लिया गया है?

(ढ) गौरव का अर्थ लिखते हुए उसके प्रकारों को व्याख्यायित करें।

प्र.2 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दें – 12

(क) पुण्य – पुण्य से उत्पन्न सुख पौदगलिक व विनाशशील कैसे है? 'अथवा' निदान रहित क्रिया का क्या फल विपाक है?

(ख) पाप – सिद्ध करें कि पाप स्वयंकृत है? 'अथवा' भाव योग को शुभाशुभ उभयरूप न मानने का क्या कारण है?

प्र.3 किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए – 18

(क) पुण्य – क्या सावद्य दान से पुण्य प्राप्त होता है? 'अथवा' पुण्योदय से कौन–कौन से सुखों की प्राप्ति होती है?

(ख) पाप – सिद्ध करें पाप कर्म पुद्गल रूपी पदार्थ है? 'अथवा' दुःख को समभाव से क्यों सहन करना चाहिए?

अवबोध : निर्जरा से देवगति – 30

प्र.4 किन्हीं नौ प्रश्नों के उत्तर एक या दो वाक्य में दें – 9

(क) क्या मिथ्यात्वी के सकाम् निर्जरा हो सकती है?

(ख) कार्मण शरीर और बंध एक है या दो?

(ग) मोक्ष प्राप्ति जिस चरम शरीर से होती है, उसमें संहनन तथा संस्थान कौन सा होता है?

(घ) चौदहवें गुणस्थान में अपूर्व निर्जरा मानी गई है, कैसे?

(ङ) भवनपति देवों को कुमार क्यों कहा गया है?

(च) सर्वोत्कृष्ट अवगाहना वाले एक समय में कितने सिद्ध हो सकते हैं?

(छ) निर्जरा व पुण्य की क्रिया एक है या दो?

(ज) बंध और पुण्य पाप में क्या अंतर है?
(झ) किन–किन देवलोकों से देव च्युत होकर मात्र कर्मभूमि मनुष्य बनते हैं?
(ञ) पहले ग्रैवेयेक के देवों की स्थिति (आयुष्य) कितना है?
(ट) व्यंतर देवों को व्यंतर क्यों कहा गया है?

प्र.5 किन्हीं छह प्रश्नों के उत्तर संक्षिप्त में दीजिए – 12

(क) क्या क्षायक सम्यक्त्वी देवता के तीर्थंकर गोत्र का बंध हो सकता है?
(ख) क्या सभी केवलियों के केवली समुद्घात होता है?
(ग) सिद्धों के आत्मप्रदेश लोकान्त भाग में यों ही छितर जाते हैं या किसी आकार विशेष में अवस्थित होते हैं?
(घ) अपने आप होने वाली निर्जरा को क्या तत्त्व के अंतर्गत माना है?
(ङ) कर्मबंध के समय प्रदेशबंध चारों का होता है या तीन, दो, एक का हो सकता है?
(च) उपशम भाव निर्जरा में सहयोगी कैसे बनता है?
(छ) किल्विषिक देव किस जाति के देवों में आते हैं?
(ज) क्या जबरदस्ती क्रिया करने से निर्जरा होती है?

प्र.6 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर व्याख्या सहित दें – 9

(क) एकेन्द्रिय में भी क्या एकाभवतारी जीव होते हैं?
(ख) निर्जरा तो आठों कर्मों की होती है, फिर वर्णन केवल चार धातिक कर्मों की निर्जरा से प्राप्त गुणों का ही क्यों आता है?
(ग) क्या एकेन्द्रिय जीवों के निर्जरा होती है?
(घ) महाविदेह क्षेत्र में सिद्ध होने में क्या अर का प्रभाव होता है?
(ड.) शासन अधिष्ठायक देवी–देवताओं का क्या क्रम है? क्या वे पूर्व निश्चित होते हैं या उनका क्रम भिन्न है?

गीतिका (दस दान, अठारह पाप) – 20

प्र.7 कोई तीन पद्य अर्थ सहित लिखें – 15

(क) ''धारो मन..... कही ए''।
(ख) ''बंदीवानादिक ने.....खवाई नै ए''।
(ग) ''ए सावद्य दान.....कर्म ए।।
(घ) ''ए मित्र नहीं.....रूढ़ में ए''।
(ङ) ''गणिकादिक.....नाम ए''।

प्र.8 किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दें – 5

(क) किन आगमों से रहस्य निकालकर व्रत–अव्रत का पृथक्करण किया गया है?
(ख) श्रावक को व्रतों की अपेक्षा से क्या कहा गया है?
(ग) लज्जा दान किसे कहते हैं?
(घ) जो दाता अव्रती को दान देता है, वह कौन सा व्यवहार है?
(ङ) भगवान ने किसका आचरण करने में किंचित भी धर्म नहीं बताया है?
(च) असंयती श्रावक के घर आने पर जो उसे भोजन कराया जाता है, उसे भगवान ने क्या कहा है? उसका उल्लेख किस सूत्र में आता है?
(छ) कौन सी तीन चीजें शुद्ध होने से दान देते समय बड़ा लाभ होता है?